त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षितः एक संक्षिप्त परिचय

पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी के द्वारा अन्य गतिविधयों के साथ-साथ प्रत्येक वर्ष 01 अप्रैल को पालि दिवस का आयोजन किया जाता है। यह पालि दिवस त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित महाथेर की जयन्ती को समाहित है। अतः हमारा यह पुनीत कर्तव्य बनता है कि हम आपको भिक्षु धर्मरक्षित के जीवन से परिचय करायें।

आधुनिक बौद्ध धर्म व साहित्य की चर्चा हो और त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित की चर्चा न हो - ऐसा कभी सम्भव नहीं; क्योंकि त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित महास्थविर जैसे महामनीषी के बिना बौद्ध धर्म व पालि साहित्य अधूरा है। आधुनिक भारत के बौद्ध धर्म के इतिहास में कुशीनगर के समीप स्थित हतवा नामक एक छोटे से गाँव के एक मौर्यवंशीय किसान परिवार में 01 अप्रैल 1923 ईस्वी में जन्मे त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित महास्थविर का अद्वितीय स्थान है। जब भी हम वर्तमान भारतवर्ष में हुए बौद्ध धर्म के पुनर्जागरण की चर्चा करते हैं, तो अनायास् ही हमारे मस्तिष्क में भिक्षु धर्मरक्षित की छवि उभरकर सामने आ जाती है। निःसन्देह, वे वर्तमान बुद्धशासन का अनमोल रत्न हैं। आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म-दर्शन, पालि तिपिटक साहित्य, बौद्ध साहित्य के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ बौद्ध तत्वज्ञान के अध्ययन-अध्यापन में भिक्षु धर्मरक्षित का अविस्मरणीय योगदान रहा है। बौद्ध साहित्य का सृजन कर बौद्ध धर्म-दर्शन के विकास के लिए कल्याणकारी कार्य करने वाले भिक्षु धर्मरक्षित एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा पालि व बौद्ध साहित्य को हिन्दी भाषा में उपलब्ध कराने की अद्वितीय भूमिका निभायी है, जिसके परिणामस्वरूप भारत में बौद्ध धर्म के विकास को एक गति मिली। उन्होंने भारतीय एवं विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करके बौद्ध धर्म-दर्शन के प्रचार-प्रसार में अविस्मरणीय भूमिका निभाई तथा अपने माता-पिता, कुल-गोत्र तथा पैतृक ग्राम का नाम रोशन किया। अतः हम कह सकते हैं कि वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक भिक्षु, कवि, लेखक, शिक्षक, अनुवादक, सम्पादक, प्रबन्धक, प्रशासनिक अधिकारी, विहाराधिपति, इतिहासकार, पुरातत्वज्ञ और प्राचार्य थे। उन्होंने सत्तर (70) से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, यात्रा विवरण, अनुवाद, व्याकरण, कोश, काव्य तथा नाटक आदि ग्रन्थ सम्मिलित हैं।

अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि मेघ से मुक्त चन्द्रमा की भाँति बुद्ध के उपदेशों एवं स्वयं को प्रकाशित करने वाले बुद्ध के इस श्रावक का मात्र 54 वर्ष की आयु में 23 मई सन् 1977 दिन सोमवार को शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के धर्मचक्रप्रवर्तन स्थल सारनाथ में संदिग्ध स्थितियों में देहान्त हो गया। लेकिन उन्होंने इतनी कम जीवन-यात्रा होने के बावजूद अत्यधिक लम्बी साहित्यिक यात्रा की और उन्होंने बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अनेक विषयों पर उपनी उत्कृष्ट लेखनी के द्वारा समाज को अद्वितीय साहित्य दिया, जो बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण है। बड़े ही दुःख की बात यह है कि उचित देखभाल व प्रकाशन न होने के कारण उनके द्वारा विरचित सम्पूर्ण साहित्य मिलना भी दुर्लभ हो गया है।

आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म की पुनर्स्थापना एवं उसके विकास में बौद्ध साहित्य के सृजन की घटना ने अविस्मरणीय भूमिका निभाई। अपने सद्कर्मों से भिक्षु धर्मरक्षित पालि साहित्य के योगदान के सन्दर्भ में एक मील के पत्थर सिद्ध हुए हैं। उन्होंने अपनी सृजनशीलता से बुद्धवचन का सरलीकरण किया तथा उसे आम जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया। यह सर्वविदित है कि बौद्ध साहित्य के सृजन में त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित का अतुलनीय योगदान रहा है। उन्होंने अपनी अद्भुत बौद्धिक क्षमता का सदुपयोग करके विपुल पालि एवं बौद्ध साहित्य का सृजन किया और बौद्ध धर्म के विकास को एक विशेष गति प्रदान की। त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित का मुख्य कार्य बौद्ध साहित्य का लेखन, अनुवाद एवं सम्पादन था। अपनी लेखनी के द्वारा उन्होंने न केवल बौद्ध साहित्य का संरक्षण किया अपितु आम जन-मानस में बौद्ध धर्म-दर्शन के प्रति जागरुकता फैलाने का भी कार्य किया। उन्होंने अपनी चौवन

(54) वर्ष की जीवन यात्रा के दौरान बुद्धशासन के चिर स्थायित्व के लिए अविस्मरणीय योगदान दिया है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने अपने अल्प जीवन में पाठकों के समक्ष लगभग सत्तर से भी अधिक ग्रन्थ दिये, जिसमें बौद्ध ग्रन्थों का लेखन-कार्य, अनुवाद-कार्य एवं सम्पादन-कार्य सम्मिलित है। भिक्षु धर्मरक्षित के साहित्य के सम्बन्ध में निम्न प्रकार से समझा जा सकता हैं -

भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा अनूदित व सम्पादित बौद्ध साहित्य

- *धर्मचक्रप्रवर्तनसूत्र*
- *महापरिनिब्बानसुत्त*
- *मज्झिमनिकाय*
- *संयुक्तनिकाय*
- *अङ्गुत्तरनिकाय (अप्रकाशित)*
- *खुद्दकपाठ*
- *धम्मपद*
- *धम्मपद: कथाओं के साथ*
- *धम्मपद (मराठी अनुवाद)*
- *इतिवुत्तक*
- *सुत्तनिपात*
- *थेरीगाथा*
- *निदानकथा*
- *चरियापिटक*
- *बुद्धवंस*
- *विशुद्धिमार्ग*
- *धम्मपद-अट्ठकथा*
- *परमत्थजोतिका नाम जातकट्ठकथा पठमो भागो*
- *मिलिन्द प्रश्न (मराठी भाषा)*
- *महावंस*
- *तेलकटाहगाथा*
- *लोकनीति*
- *भिक्खु पातिमोक्ख तथा कर्म वाचा*
- *श्रामणेर विनय*
- *पालि पाठमाला पठमो भागो*
- *पालि हिन्दी कोश*

भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा विरचित बौद्ध साहित्य

- *पालि साहित्य का इतिहास*
- *पालि व्याकरण*
- *जातिभेद और बुद्ध*
- *बौद्ध धर्म ही मानव धर्म*
- *बौद्ध धर्म हाच मानव धर्म (मराठी)*

- *कुशीनगर का इतिहास*
- *कुशीनगर दिग्दर्शन*
- *सारनाथ का इतिहास*
- *सारनाथ दिग्दर्शन*
- *सारनाथ वाराणसी*
- *बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय*
- *बौद्ध विभूतियाँ*
- *मुख्य बौद्ध विभूतियाँ*
- *बौद्ध धर्म के उपदेश*
- *आचार्य बुद्धघोष*
- *बौद्धचर्या-विधि*
- *बौद्ध धर्म-दर्शन तथा साहित्य*
- *तथागत हृदय*
- *सुखी गृहस्थी के लिए बुद्ध उपदेश*
- *बौद्ध धर्म*
- *बौद्ध योगी के पत्र*
- *कालाम गणतन्त्र का केशपुत्र*
- *बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्त*
- *भदन्त चन्द्रमणि महास्थविर*
- *बौद्ध धर्म के पुनरुद्धारक - अनगारिक धर्मपाल*
- *बुद्ध महाप्राण (काव्य)*
- *बौद्ध धर्म की बालपोथी*
- *प्रथम बुद्ध सन्देश*
- *द्वितीय बुद्ध सन्देश*
- *ओंम मणि दमाह्*
- *पंचशील कथा*
- *निकाय संग्रह*
- *हिन्दी त्रिपिटक*
- *बौद्ध कहानियाँ*
- *बौद्ध संस्कार पद्धति*
- *बौद्ध शिशु बोध*
- *बौद्ध धर्म की बात*
- *बौद्ध साधना*
- *बोधि के पत्र*
- *बुद्ध*

भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा रचित अन्य साहित्य

- *भक्त प्रहलाद (नाटक)*

- *भंग भारती (काव्य)*
- *लंका यात्रा*
- *नेपाल की यात्रा*
- *सन्त : श्यामाचरण जीवन तथा कृतित्व*
- *मल्लबन्धु (कहानी संग्रह)*

भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा विरचित कविताएँ

- *माँ! मेरा यौवन भूला है*
- *कौन सा मैं गान गाऊँ*
- *विशारद*
- *आह्वान*
- *हलचल*
- *कुशीनगर के खण्डहर वन*
- *सम्हल कर चलो*
- *निमन्त्रण*
- *अवधान गी*
- *बुद्ध वन्दना*
- *कपिलवस्तु*
- *शील शुद्धि*
- *मजदूर की आह*
- *क्यों मानव बूढ़ा होता*
- *पावा की स्मृति में*
- *कुशीनगर*
- *पावा की पुण्य भूमि*
- *ओ कुशीनगर के महातपस्वी तेरा अभिनन्दन है*
- *खुद सम्हलो*
- *भाग्य की वसुन्धरा*
- *दुस्तर बन्धन*
- *शाक्य*
- *प्रेम ही दु:ख है*
- *नमो बुद्धाय*
- *शील*
- *तथागत*
- *परिपूर्ण तेरी कामनाएँ हो यही आशीष है*
- *अभिवादन*
- *जाना तू सौगत साधक है*
- *अर्चना*
- *शरणागत*

- *बुद्ध पूर्णिमा*
- *साधक के गान*
- *चीवर*
- *खण्डहर*

इसी प्रकार से त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा सैकड़ों कविताएँ रची गयी, जो समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं।

भिक्षु धर्मरक्षित ने ग्रन्थ-लेखन के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन के कार्य में भी विशेष रुचि के साथ किया। उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन के साथ-साथ उनके प्रकाशन पर भी ध्यान दिया, ताकि समय से विद्वानों के विचार आमजनमानस तक पहुँच सकें। साहित्यिक गतिविधियों की निरन्तरता को बनाये रखने के लिए उन्होंने शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के धर्मचक्रप्रवर्तन स्थल सारनाथ को अपना प्रमुख केन्द्र बनाया और भारतीय महाबोधि सभा के सहयोग से कार्य करना प्रारम्भ किया। इसी श्रृंखला में उन्होंने *धर्मदूत* नामक मासिक पत्रिका, जो एक महत्वपूर्ण बौद्ध पत्रिका थी, के सम्पादन व प्रकाशन के कार्य को प्राथमिकता दी। भिक्षु धर्मरक्षित ने सन् 1948 में *'धर्मदूत'* नामक मासिक पत्रिका, जो उनके समय से लेकर अब तक महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया, सारनाथ से निरन्तर प्रकाशित हो रही है, के सम्पादक का कार्यभार सम्भाला।

यदि हम बीसवीं शताब्दी के बौद्ध विद्वानों की बात करें, तो हमें महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, भिक्षु जगदीश काश्यप, डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन एवं त्रिपिटकाचार्य डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित नामक चतुवर्गीय भिक्षु-संघ का स्मरण अनायास ही हो आता है। आधुनिक भारतवर्ष में बौद्ध धर्म-दर्शन की पुनर्स्थापना में इन चारों महान विभूतियों का अति विशिष्ट योगदान रहा है। उपरोक्त अन्य तीन विद्वानों के समान ही भिक्षु धर्मरक्षित ने भी कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए विदेशों में जाकर पालि भाषा व साहित्य का गहन अध्ययन किया और पालि भाषा के दुरूह व कठिन ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया तथा कई पालि ग्रन्थों का सम्पादन भी किया। उन्होंने पालि ग्रन्थों का न केवल हिन्दी भाषा में अनुवाद किया, अपितु अन्य भारतीय भाषाओं में भी पालि ग्रन्थों को अनुवादित करके उपलब्ध करवाया। नि:सन्देह, आपके द्वारा प्रदत्त साहित्यिक योगदान के लिए पालि व बौद्ध अध्ययन के साधक तथा भारतीय बौद्ध समाज सदैव ही कृतज्ञ रहेंगे।